ISSN 2321 –0567
Vol. VIII, Issue II (Oct.- 2020)

भारतीय संगीत एवं पाश्चात्य संगीत का अंतः सम्बन्ध

कपिल देव
शोधार्थी (पीएच.डी.)
संगीत एवं नृत्य विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

भारतीय संगीत रस पर आधारित है। भारतीय संगीत का सम्बंध वेदों से मान्य है। वेद का बीज मन्त्र है – 'ओम'। ओम् के तीनों अक्षर अ, उ और म तीन ईश्वरीय शक्तियों के द्योतक है। इन तीनों शक्तियों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का पुंज ही 'त्रिमूर्ति' परमेश्वर है। इन तीनों अक्षरों को ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद से लिया गया है। इन अक्षरों के संयोग से ही 'ओम शब्द' निर्मित हुआ। संगीत के सप्त स्वर षडज, ऋषभ आदि ओंकार के ही अर्न्तविभाग है। शब्द और स्वर की उत्पत्ति ओम के गर्भ से हुई है, अर्थात्, ओम शब्द ही संगीत का जनक है। समस्त कलाएं ओम में ही निहित है। इसमें लय, ताल और स्वर का समावेश है।[1]

संगीत चिंतामणि के अनुसार, संगीत एक व्यापक शब्द है। गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों मिलकर संगीत कहलाते है। इसमें गीत प्रधान तत्व है, वाद्य उस का अनुकारक है तथा नृत्य उपरंजक है। अर्थात् वाद्य गीत का अनुकरण करता है और नृत्य वाद्य का संगीत शब्द का प्राचीन पर्याय ''तौयत्रिक' है।[2]

भारतीय सुगम संगीत शास्त्रीय संगीत से ही अवतरित हुआ है और इसकी अनेक विधाएं है जैसे गीत, भजन, गज़ल कव्वाली आदि। सभी विधाएं आज पाश्चात्य संगीत से पूरी तरह जुड़ चुकी है। 'गीत' जो कि सुगम संगीत की एक विधा है के भी दो भेद माने जाते है। गांधर्व और गान। जो संगीत अनादि एवं शब्द प्रधान है, जिसका उपयोग गान्धर्व किया करते थे और जिसका मुख्य लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति होता था, गान्धर्व कहलाता है। जिस संगीत का निर्माण वाग्येकारों में अनेक प्रकार के देशी रागों के लक्षणों द्वारा किया और जिनका प्रमुख उद्देश्य जन चित्रांरकता है उसे गान कहा जाता

है। गीत के चार अंग होते है – राग, भाषा, ताल और मार्ग। इन चारों के द्वारा भावना की अभिव्यक्ति होती है। चारों एक–दूसरे के पूरक है। चारों मिलकर ही गीत कहलाते हैं।[3] इसी के साथ जब हम पाश्चात्य संगीतज्ञों को अपने सम्मुख वादन करते हुए सुनते है तो प्रायः सबके आगे कागज पर लिखी हुई उनकी स्वरलिपि को देखते है जिसको देखकर वो अपनी अपनी कला का प्रदर्शन करते है। पाश्चात्य संगीतज्ञों के अनुसार भी यदि संगीत की परिभाषा पर ध्यान दिया जाए तो विदित होगा कि स्वरों का वह विशेष मिश्रण जोकि भावनाओं को प्रभावित करे, संगीत कहलाता है। इस प्रकार संगीत की परिभाषा में चाहे वह पाश्चात्य दृष्टिकोण से ली गई हो अथवा भारतीय दृष्टिकोण से, दोनों का लक्ष्य मनुष्य की भावनाओं को प्रभावित करना है।[4]

पाश्चात्य देशों में संगीत वाद्यों की संख्या भारतीय वाद्यों की तुलना में कम रही है और दोनों देशों के वर्गीकरण में काफी समानतायें मिलती है। पाश्चातय वाद्य वर्गीकरण के मुख्य 3 भेद हैं जो अठारहवी सदी तक प्रचार में रहे।[5]

1. तत् वाद्य (String Instruments)
2. सुषिर वाद्य (Wind Instruments)
3. आपस में टकरा कर बजने वाले वाद्य (Percussion Instruments)

18वीं शताब्दी के बाद वृन्द वादन के अधिक विकास एवं लोकप्रियता के कारण वहां वाद्यों की संख्या तथा स्तर में काफी वृद्धि हुई। नवीन वाद्यों की उत्पत्ति के साथ–साथ वाद्यों की वादन तकनीक में भी निरन्तर सुधार हुआ। इसी कारण वहां वाद्यों के नवीन वर्गीकरण की आवश्यकता पड़ी और पुराने वर्गीकरण में ही सुधार करके नवीन वर्गीकरण को प्रचार में लाया गया जो वाद्यों की बनावट व उनके प्रयोग को ध्यान पर रखकर किया गया। पाश्चात्य वैज्ञानिक संगीतज्ञ श्री एम.गेवर्ट ने 1880 में भारतीय वर्गीकरण के आधार पर वर्गीकरण के चार भेद किये।[6]

1. तत् वाद्य (String Instruments)

ISSN 2321 –0567
Vol. VIII, Issue II (Oct.- 2020)

2. सुषिर वाद्य (Wind Instrument)

3. पीटकर बजाये जाने वाले वाद्य (Percussion Instrument)

4. धन वाद्य (Autophonic Instrument)

भारतीय वर्गीकरण के आधार पर ही यहाँ भी इन वाद्यों को एक अलग वर्ग में रखा गया जिसको ही आज Idia Phone कहा जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किया गया वाद्य वर्गीकरण मूलतः भरत के चतुर्विध वाद्य वर्गीकरण से ही अनुप्रेरित है, लेकिन आधुनिक वाद्यों को समाविष्ट करने के लिए आजकल पाश्चात्य संगीत में मुख्य पाँच वर्ग कर दिये गये हैं– तत, अवनद्ध, धन और सुषिर वाद्यों के साथ पांचवा वर्ग विद्युत चालित वाद्य का रखा गया है।

भारतीय संगीत में आज अगर हम पाश्चात्य संगीत की अगर बात करें तो प्रायः देखने को मिलता है कि इन दोनों को अलग करना मुश्किल प्रतीत होता है। आज भारतीय संगीत केवल भारतीय न रहकर पाश्चात्य संगीत का मिला–जुला रूप बन चुका है जोकि आज की मुख्य आवश्यकता भी बन चुकी है।

भारतीय संगीत में पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोगः

भारतीय संगीत के गीत, भजन, लोकगीत, गज़ल आदि सुगम संगीत की विधाओं तथा विशेषतः चित्रपट संगीत में पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग भरपूर किया जाता है कुछ पश्चिमी वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुके हैं जैसे वायालिन, हारमोनियम, आदि।

कई अन्य पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग वृंदवादन, सिने संगीत, सुगम संगीत आदि में हो रहा है। पाश्चात्य वाद्यों का सबसे अधिक प्रयोग चलचित्रों में पार्श्व संगीत के रूप में हो रहा है। सिनेमा संगीत में पाश्चात्य वाद्य गिटार, इलेक्ट्रोनिक गिटार, ऐकोस्टिक, स्पेनिश गिटार, सिन्थेसाइजर, आक्टोपेड, एकोरडियन, प्यानो बाइब्रोफोन, जैलोफोन, ड्रम, कांगो, इंग्लिशफलूट, सेक्सोफोन, क्लारिनेट, ट्रम्पेट, बेस शैलों आदि वाद्य प्रमुख है।[7]

ISSN 2321 –0567
Vol. VIII, Issue II (Oct.- 2020)
Impact Factor: 1.113 : IC Value:6.48

विदेशी वाद्यों के कारण चित्रपट संगीत में भी गति आई। तबला व ढोलक के साथ–साथ कॉगो–बोंगो का प्रयोग होने लगा। साथ ही साथ ड्रम, ओक्टोपेड व बॉस गिटार के बिना तो अब कोई भी भारतीय सुगम संगीत में रचना सुनने को नही मिलती। अब सुगम–संगीत व लोक संगीत में भी पाश्चात्य संगीत के वाद्यों का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है। भजन गायन में गिटार, वायलिन तथा कलारिनेट, सिंथेसाइजर आदि वाद्यों का प्रयोग संगत के रूप में होने लगा है और हॉरमोनियम, वायलिन तथा क्लारिनेट ये वाद्य भारतीय संगीत में पूर्ण रूप से समाहित हो चुके है।

ख्याल गायन में सारंगी के साथ–साथ हारमोनियम एवं कथक नृत्थ में भी लहरा देने के लिए हारमोनियम और लोक संगीत में कलारिनेट वाद्य अत्याधिक प्रयोग में आने लगे है। उसी प्रकार पाश्चात्य वाद्य गिटार भी कुछ परिवर्तन के साथ शास्त्रीय संगीत में प्रयोग हो रहा है। ग्रेमी अवार्ड से विभूषित पदमश्री पं. विश्वमोहन भट्ट ने गिटार के आधार पर 'मोहन वीणा' की रचना की जो बहुत लोकप्रिय हुई।

विवाह आदि अवसरों पर भी पाश्चात्य वाद्य जैसे बैंड इत्यादि में ट्रम्पेट, सेक्सोफोन, कलारिनेट आदि प्रयोग किए जाते हैं। शहनाई, नगाडे के स्थान पर पाश्चात्य वाद्यवृंद बैण्ड का प्रयोग सामान्य हो गया है। पाश्चात्य वाद्यों की आधुनिकता व वैज्ञानिकता के कारण भी ये वाद्य अति लोकप्रिय हुए है। एक ही इलेक्ट्रोनिक वाद्य से विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ प्राप्त होती है, और इससे अनेक वाद्यों के स्थान पर एक ही से काम लिया जाता है। ये वाद्य भारतीय वाद्यों की तुलना में कम जटिल भी है इसीलिए युवा वर्ग में अधिक लोकप्रिय हुये है।

भारतीय संगीत का सम्बंध आज पाश्चात्य संगीत के साथ स्पष्ट दिखाई दे रहा है और यह कहना भी अनुचित न होगा कि भारतीय संगीत की सभी विधाओं शास्त्रीय संगीत, वृन्दवादन, सुगम संगीत, लोकसंगीत, सामूहिक संगीत पर पाश्चात्य वैज्ञानिकता व संगीत का प्रभाव पड़ा है।[8]

भारतीय वृन्द वादनः वृंदवादन व आरकेस्ट्रा वाद्य वृंद के ही पर्यायवाची है। वृंदवादन व वाद्य वृंद भारतीय संगीत की मौलिक शैलियां है, जबकि आरकेस्ट्रा पाश्चात्य भाषा है। भारतीय वृंदावन के लिए हमारे यहाँ कुतुप, अथवा तूर्य संज्ञायों का प्रयोग हुआ है, किन्तु वर्तमान भारतीय वृन्दवादन पर पाश्चात्य आरकेस्ट्रा का प्रभाव पड़ा है। प्राचीनकाल में वृन्दवादन नाटकों में प्रचलित था, मध्यकाल में वृन्दवादन का कोई व्यापक इतिहास नहीं मिलता। आधुनिक युग में प्रचलित वाद्य वृन्द का प्रयोग अंग्रेजों के शासनकाल में प्रारम्भ हुआ, जबकि संगीत को विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं, हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, इत्यादि भाषा के नाटकों में स्थान मिला और इन नाटकों में भारतीय आरकेस्ट्रा का निर्माण हुआ। वाद्यवृंद का यह परिष्कृत रूप था, और इसमें विदेशी वाद्यों हारमोनियम, कलारनेट, ट्रम्पटे, वायलिन आदि का प्रयोग शुरू हुआ।

भारतीय संगीतज्ञों ने पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग भारतीय आरकेस्ट्रा में किया, क्योंकि पाश्चात्य वाद्यों में उस अनुरूप टोनल क्वालिटी थी, उस्ताद अलाउद्दीन झॉ ने ''मैहर बैण्ड' के नाम से एक भारतीय वाद्यवृन्द का निर्माण किया, जिसमें पाश्चात्य वाद्यों क्लारनेट, पियानो, वायलिन आदि का प्रयोग किया और बैण्ड मास्टर लोगों से पाश्चात्य संगीत की शिक्षा लेकर अंग्रेजी धुनों को भारतीय रागों में बांधा। तिमिरवरन भट्टाचार्य तथा पं. रविशंकर ने इस दिशा में नवीन प्रयोग किए। पं. रविशंकर का आरकेस्ट्रा के विकास में बहुत योगदान है, उन्होंने पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग अपने वाद्य–वृंद में किया और 1952 में उन्होंने ''नेशनल आरकेस्ट्रा'' नामक वाद्यवृन्द की रचना की।[9] वर्तमान में जिस प्रकार भारतीय संगीत में सुगम संगीत की विभिन्न गायन शैलियाँ (विधाएँ) प्रचलित है उसी प्रकार पाश्चात्य संगीत में भी अलग–अलग पाश्चात्य संगीत रचनाए प्रचलित है[10] जैसे–

1. आपेराः– संगीत प्रधान एकांकी रचना को आपेरा की संज्ञा दी जाती है। इस रचना में गायन द्वारा भाव अभिनय किया जाता है।

ISSN 2321 –0567
Vol. VIII, Issue II (Oct.- 2020)

2. खीटः– पाश्चात्य संगीत खीट रचना का आधार अनेक प्रकार की नृत्य रचनाएँ होती है, जिनमें विभिनन प्रकार की लयकारी के आधार पर नृत्य की धुनों को संयोजित किया जाता है।

3. सोनाटाः– यह वाद्य संगीत की रचना है, जिसे Italian भाषा के 'सौनोर' से ग्रहण किया गया है। पहले इस रचना को केवल एक या दो वाद्यों पर बजाया जाता था, किन्तु ठंबी और भ्ंदकमस जैसे संगीतज्ञों ने तीन वाद्यों के आधार पर भी इस शैली की रचनाओं का सृजन किया।

4. आरटोरियोः– धार्मिक घटनाओं को बिना वेश–भूषा के नाटकीय ढंग पर प्रस्तुत करने को आरटोरियों कहा गया है।[11] इसी प्रकार से सिम्फनी, बैलेड, नौकटर्न आदि सांगतिक रचनाएं है। भारतीय सुगम संगीत में भी अनेक विधाए देखी जा सकती है परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि संगीत का जो आधार है वह स्वर ही है। स्वरों के आकर्षक प्रयोग से ही गायन या वादन को एक अनोखा रूप दिया जा सकता है चाहे भारतीय संगीत हो या पाश्चात्य संगीत।

वर्तमान में अनेकों भारतीय संगीतज्ञ अपनी आरकेस्ट्रा रचनाओं को सफल बनाने हेतु अपने वाद्यवृन्द में इन पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग कर रहे और इस प्रकार पाश्चात्य वाद्यों के प्रयोग से एक नवीन तथा परिष्कृत रूप दृष्टिगोचर होता है। हम यह भी कह सकते हैं कि भारतीय संगीतज्ञ पाश्चात्य संगीत को भारतीय रूप देने में प्रयासरत है। पं. रविशंकर ने पाश्चात्य सिम्फनी के आधार पर कई वाद्यवृन्दों की रचना की है।[12]

संदर्भः

1. भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण स्वतन्त्र शर्मा, पृ. 3
2. संगीत चिंतामणि, आचार्य बृहस्पति, पृ.सं. 5
3. शास्त्रीय संगीत का इतिहास, अनिता शर्मा, पृ. सं. 102
4. पाश्चात्य संगीत शिक्षा, भगवत शरण शर्मा, पृ.सं. 939
5. वही, पृ. 69
6. प्रो. स्वतन्त्र शर्मा, पाश्चात्य स्वरलिपि–पद्धति एवं भारतीय संगीत– पृ.सं. 69
7. पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति एवं भारतीय संगीत, प्रो. स्वतंत्र शर्मा, पृ.सं. 72
8. पाश्चात्य संगीत शिक्षा – भगवत शरण शर्मा, पृ.सं. 55
9. पाश्चात्य संगीत शिक्षा, भगवतशरण शर्मा, पृ.सं. 56
10. पाश्चात्य संगीत शिक्षा, भगवतशरण शर्मा पृ.सं. 56
11. पाश्चात्य संगीत शिक्षा भगवत शरण शर्मा – पृ.सं. 44
12. पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति एवं भारतीय संगीत, प्रो. स्वतंत्र शर्मा, पृ. 56